

मध्य-पूर्व में भारत के हति

यह एडिटरियल 07/08/2024 को 'इंडियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित "A widening war in the Middle East" लेख पर आधारित है। इसमें मध्य-पूर्व में अस्थिरता एवं बढ़ते संघर्ष, भारत के लिये इस क्षेत्र के महत्त्व और क्षेत्र में भारतीय आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आवश्यक कदमों की चर्चा की गई है।

प्रलम्ब के लिये:

मध्य पूर्व, भारत की कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस की आवश्यकताएँ, चाबहार बंदरगाह परियोजना, अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा, भारत-मध्य पूर्व-यूरोप गलियारा, इस्लामिक सहयोग संगठन, अरब लीग, UNSC, इजरायल-फिलिस्तीनी संघर्ष, अब्राहम समझौते, भारत-यूई वयापक आर्थिक भागीदारी समझौता।

मेन्स के लिये:

भारत के लिये मध्य पूर्व का महत्त्व, मध्य पूर्व से संबंधित मुद्दे और भारत पर प्रभाव।

मध्य पूर्व (Middle East) विश्व के लिये एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बना हुआ है और भारत भी इसका अपवाद नहीं है। हाल के समय में **इजराइल और ईरान समर्थित शक्तियों के बीच तनाव** की वृद्धि हुई है, जो हिसा और प्रतर्षो के एक दुष्चक्र से चिह्नित होती है और इस क्षेत्र के जटिल समीकरण को रेखांकित करती है। इस दीर्घकालिक अस्थिरता ने न केवल इस भूभाग को अस्थिर किया है, बल्कि इसके वैश्विक परिणाम भी उत्पन्न हुए हैं, जिनमें तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव और भू-राजनीतिक तनाव में वृद्धि शामिल हैं।

इस भू-भाग की रणनीतिक अवस्थिति, ऊर्जा सुरक्षा हितों और बढ़ते आर्थिक संबंधों को देखते हुए, एक स्थिर मध्य-पूर्व में भारत अत्यंत महत्त्वपूर्ण हति रखता है। यह क्षेत्र भारत के लिये ऊर्जा का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत बना हुआ है, साथ ही यह भारत की वस्तुओं एवं सेवाओं के लिये एक प्रमुख बाजार भी है। इस परिदृश्य में, भारत के लिये आवश्यक है कि वह सभी प्रमुख हतिधारकों के साथ सक्रिय रूप से संलग्न हो और एक संतुलित एवं स्वतंत्र विदेश नीति का पालन करे।

भारत के लिये मध्य-पूर्व का क्या महत्त्व है?

- **ऊर्जा सुरक्षा और व्यापार संबंध:** मध्य-पूर्व भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिये अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।
 - यह क्षेत्र भारत की **भारत की कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस की आवश्यकताओं** की पूर्ति करता है, जिससे यह भारत की तेज़ी से विकास करती अर्थव्यवस्था के लिये ईंधन का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत बन गया है।
 - IEA के **ग्लोबल एनर्जी आउटलुक 2021** के अनुसार, वैश्विक प्राथमिक ऊर्जा उपभोग में भारत की वर्तमान **हसिसेदारी 6.1%** है और घोषित नीतिपरिदृश्यों के तहत यह वर्ष 2050 तक लगभग **9.8% तक पहुँच** सकती है।
 - सऊदी अरब, इराक और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देश भारत के प्रमुख ऊर्जा भागीदार हैं।
 - क्षेत्र की ऊर्जा आपूर्ति में व्यवधान या वैश्विक तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव का भारत के आर्थिक प्रदर्शन और मुद्रास्फीति के स्तर पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।
- **आतंकवाद-रोधी सहयोग:** मध्य-पूर्व ऐतिहासिक रूप से अल-कायदा, ISIS और उनके सहयोगियों सहित विभिन्न आतंकवादी संगठनों के लिये सुरक्षा शरणस्थली रहा है, जो भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये गंभीर खतरा उत्पन्न करता है।
 - भारत इस भू-भाग में **संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब और इजराइल** जैसे देशों के साथ खुफिया जानकारी साझा करने, आतंकवाद वरीधी प्रयासों में समन्वय करने और इन आतंकवादी समूहों के वित्तपोषण एवं रसद को बाधित करने के लिये सहयोग कर रहा है।
 - SIPRI के अनुसार, पिछले **10 वर्षों में भारत ने इजराइल से 2.9 बिलियन** अमेरिकी डॉलर के सैन्य उपकरण आयात किये हैं।
 - सऊदी अरब ने हाल ही में खुफिया जानकारी साझा करने और आतंकवाद के वित्तपोषण को रोकने के माध्यम से आतंकवाद से मुकाबला करने के लिये भारत के साथ अपनी साझेदारी को मज़बूत करने की प्रतिबद्धता जताई है।
 - इस सहयोग से भारत को ऐसे कई **आतंकवादी षड्यंत्रों को वफिल करने** और चरमपंथी नेटवर्क को ध्वस्त करने में मदद मिली है, जिनहोंने घरेलू और विदेशी दोनों ही स्तरों पर भारतीय हितों को नशाना बनाया है।
- **भारतीय प्रवासी और धन प्रेषण का प्रवाह:** मध्य-पूर्व में बड़ी संख्या में भारतीय प्रवासी नविस करते हैं।
 - **1.34 करोड़ अनवासी भारतीयों (NRIs) में से 66%** से अधिक संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, कुवैत, कतर, ओमान और बहरीन

जैसे देशों में रहते हैं।

- ये **प्रवासी समुदाय न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान देते हैं, बल्कि भारत के लिये धन प्रेषण (remittances) का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी हैं।**
- इस **प्रवासी समुदाय का कल्याण एवं सुरक्षा भारत के लिये एक प्रमुख** चिंता का विषय है और भारत ने उनकी सुरक्षा के लिये विभिन्न उपाय किये हैं, जैसा कि हाल ही में क्रम में भारतीय नौसेना के पूर्व अधिकारियों के मामले में देखा गया।
- सांस्कृतिक और सभ्यतागत संबंध:** मध्य-पूर्व भारत के साथ गहरे सांस्कृतिक, सभ्यतागत और ऐतिहासिक संबंध साझा करता है, जो प्राचीन समुद्री व्यापार मार्गों तक जुड़ा हुआ है।
 - वर्तमान में ये संबंध **भारत और इस क्षेत्र के बीच साझे स्थापत्य वरिष्ठत, पाक-कला परंपराओं और कला, साहित्य एवं वदिवत्ता** के जीवन्त आदान-प्रदान में प्रतिबिंबित होते हैं।
 - भारत-अरब लीग मीडिया संगोष्ठी (India-Arab League media symposium) तथा अबू धाबी में BAPS हट्टि मंदिर** जैसी हालिया पहलों का उद्देश्य इन सांस्कृतिक संबंधों को और मज़बूत करना है।
- क्षेत्रीय संपर्क और आधारभूत संरचना:** भारत मध्य-पूर्व में क्षेत्रीय संपर्क और आधारभूत संरचना परियोजनाओं के विकास में सक्रिय रूप से संलग्न रहा है, जिसका उसके आर्थिक और रणनीतिक हितों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है।
 - उदाहरण के लिये, ईरान के **चाबहार बंदरगाह परियोजना, अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC) और भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे** में भारत की भागीदारी का उद्देश्य मध्य-पूर्व भूभाग के माध्यम से मध्य एशिया एवं यूरोप तक भारत की पहुँच को बढ़ाना है।
 - इन पहलों से भारत के व्यापार को बढ़ावा मलिया, उसके क्षेत्रीय प्रभाव का वसितार होगा और अफगानिस्तान एवं अन्य क्षेत्रों तक पहुँच के लिये पाकिस्तान पर उसकी निर्भरता कम होगी।
- बहुपक्षीय सहभागिता और वैश्विक प्रभाव:** मध्य-पूर्व के साथ भारत की सक्रिय सहभागिता उसे संयुक्त राष्ट्र, **इस्लामिक सहयोग संगठन (OIC)** और अरब लीग जैसे बहुपक्षीय मंचों पर अपना प्रभाव डालने का अवसर भी प्रदान करती है।
 - इन जटिल क्षेत्रीय गतिशीलताओं को समझने और गठबंधन का निर्माण कर सकने की भारत की क्षमता रणनीतिक महत्त्व के मुद्दों (जैसे **जलवायु परिवर्तन वित्तपोषण और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद** जैसे अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में सुधार) पर उसकी वैश्विक स्थिति तथा सौदेबाज़ी की शक्ति को बढ़ा सकती है।
 - यह घरेलू मुद्दों को सुलझाने में, जैसे समान विचारधारा वाले **OIC देशों के साथ सहयोग के माध्यम से कश्मीर मुद्दे** को सुलझाने, में भी भारत की स्थिति को मज़बूत कर सकती है।

मध्य-पूर्व लगातार संघर्ष और अस्थिरता का क्षेत्र क्यों बना हुआ है?

- भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता और छद्म संघर्ष:** मध्य-पूर्व ईरान, सऊदी अरब, इज़राइल, तुर्की और संयुक्त राज्य अमेरिका सहित विभिन्न क्षेत्रीय एवं वैश्विक शक्तियों के बीच भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता का केंद्र बना रहा है।
 - ये प्रतिद्वंद्विताएँ प्रायः **छद्म संघर्षों (proxy conflicts)** के माध्यम से प्रकट होती हैं, जहाँ विभिन्न देश अपने रणनीतिक हितों को आगे बढ़ाने के लिये गैर-राज्य अभिकर्ताओं (non-state actors) या वरिधी गुटों को प्रशर्य एवं समर्थन प्रदान करते हैं।
 - यमन में संघर्ष, जहाँ **ईरान समर्थित हुथी (Houthi)** विद्रोही सऊदी नेतृत्व वाले गठबंधन से लड़ रहे हैं, इसका एक प्रमुख उदाहरण है कि किस प्रकार ये भू-राजनीतिक तनाव दीर्घकालिक एवं विनाशकारी युद्धों में बदल सकते हैं।
 - स्पष्ट शक्ति संतुलन के अभाव तथा स्थानीय संघर्षों में बाह्य शक्तियों के हस्तक्षेप की प्रवृत्ति ने क्षेत्र में अस्थिरता को बनाए रखा है।
- दीर्घकालिक संघर्ष और अनसुलझे विवाद:** मध्य-पूर्व में अनेक दीर्घकालिक संघर्ष, जैसे इज़राइल-फिलिस्तीनी संघर्ष, बने रहे हैं जिनका दशकों से समाधान नहीं हो पाया है।
 - बाह्य शक्तियों की संलग्नता, **पक्षकारों के रुख में कठोरता और व्यापक, समावेशी एवं न्यायपूर्ण शांति प्रक्रिया** के अभाव के कारण ये संघर्ष और भी गंभीर हो जाते हैं।
 - अब्राहम समझौते (Abraham Accords)** जैसे प्रस्ताव—जसिने इज़राइल, संयुक्त अरब अमीरात और बहरीन के बीच संबंधों को सामान्य बनाया था, अब असफलताओं का सामना कर रहे हैं तथा पूर्व में की गई प्रगतियों को पीछे धकेल रहे हैं।
- सांप्रदायिक विभाजन और पहचान की राजनीति:** मध्य-पूर्व में गहरा सांप्रदायिक विभाजन व्याप्त है, विशेष रूप से **सुन्नी और शिया मुसलमानों के बीच**, जसिने अनेक द्वंद्वों और सत्ता संघर्षों को बढ़ावा दिया है।
 - इन सांप्रदायिक तनावों का विभिन्न राजनीतिक शक्तियों द्वारा समर्थन जुटाने, अपनी सत्ता मज़बूत करने और वरिधी समूहों को हाशिये पर धकेलने के लिये लाभ उठाया गया है।
 - अरब **राष्ट्रवाद और इस्लामवाद जैसे पहचान-आधारित आंदोलनों** के उदय ने भी क्षेत्र के राजनीतिक वखंडन और कट्टरपंथी विचारधाराओं के उदय में योगदान दिया है।
 - सीरियाई गृह युद्ध, जहाँ संघर्ष ने एक विशिष्ट सांप्रदायिक चरित्र ग्रहण कर लिया है, इस बात का एक प्रमुख उदाहरण है कि किस प्रकार ये पहचान-आधारित विभाजन हसिक टकरावों में परिणत हो सकते हैं।
- सत्तावादी शासन और लोकतंत्रीकरण का अभाव:** मध्य-पूर्व के कई देशों में सत्तावादी शासन (**Authoritarian Regimes**) स्थापित हैं जो अपने नागरिकों की भलाई की अपेक्षा शासन की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हैं।
 - ये शासन सत्ता पर अपनी पकड़ बनाए रखने के लिये प्रायः दमनकारी उपायों पर निर्भर रहते हैं, जैसे असहमतियों को कुचलना, राजनीतिक वरिधियों को क़ैद करना और नागरिक स्वतंत्रता का दमन करना।
 - वास्तविक **लोकतांत्रिक सुधारों और जवाबदेह शासन** के अभाव ने जनता के असंतोष को बढ़ावा दिया है, जसिके परिणामस्वरूप वर्ष 2011 में **‘अरब स्प्रिंग’** जैसे विद्रोह और क्रांतियाँ हुईं।
 - इन विद्रोहों के मूल कारणों, जैसे **आर्थिक असमानता, भ्रष्टाचार और राजनीतिक वंचना** को संबोधित करने की वफिलता ने क्षेत्र में अस्थिरता के चक्र को कायम बना रखा है।
- संसाधनों की कमी और पर्यावरणीय चुनौतियाँ:** मध्य-पूर्व गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रहा है, जसिमें घटते तेल संसाधन, जल की

कमी, मरुस्थलीकरण और जलवायु परिवर्तन के विभिन्न प्रभाव शामिल हैं।

- संसाधन संबंधी इन बाधाओं से मौजूदा तनावों के बढ़ने और सीमिति संसाधनों के नयित्रण एवं वितरण को लेकर नए संघर्षों को बढ़ावा मिलने की संभावना है।
- उदाहरण के लिये, नील नदी पर **ग्रैंड इथियोपियन रेनेसांस बाँध (Grand Ethiopian Renaissance Dam)** के निर्माण को लेकर **ववाद ने मिस्र, सूडान और इथियोपिया** के बीच तनाव को बढ़ा दिया है।

भारत मध्य-पूर्व के साथ अपने संबंध कसि प्रकार मज़बूत कर सकता है?

- **संतुलति एवं सूक्ष्म वदिश नीति दृष्टिकोण:** मध्य-पूर्व के प्रमुख खलिाड़ियों के साथ संतुलति एवं सूक्ष्म संबंध बनाए रखने की भारत की क्षमता एक मूल्यवान आस्ता है।
 - भारत इस क्षेत्र की **भू-राजनीतिक प्रतदिवंदवति** में कसि का पक्ष लेने के प्रलोभन से बचते हुए स्वयं को एक तटस्थ मध्यस्थ एवं संवाद को बढ़ावा देने वाले देश के रूप में स्थापति कर सकता है। भारत का यह रुख हाल में इज़राइल-हमास संघर्ष के दौरान प्रदर्शति भी हुआ, जहाँ भारत ने इज़राइल पर आतंकवादी हमलों की नदि की, लेकिन साथ ही फलिसितीन के लयिदो-राज्य समाधान (**two-state solution**) का समर्थन भी कयि।
 - इसके अलावा, **अमेरिकी प्रतबिंधों के बावजूद ईरान के साथ संवाद के खुले चैनल** बनाए रखने के भारत के हालिया प्रयास इस संतुलति वदिश नीति दृष्टिकोण के प्रतउसकी प्रतबिदधता को प्रदर्शति करते हैं।
- **आर्थिक संलग्नता और अंतर-नरिभरता को बढ़ाना:** आर्थिक संबंधों और अंतर-नरिभरता को मज़बूत करना भारत की **मध्य-पूर्व रणनीति का एक महत्त्वपूर्ण तत्व** हो सकता है।
 - भारत व्यापार, नविश और ऊर्जा सहयोग का वसितार कर क्षेत्रीय स्थरिता और शांतपूरण सह-अस्तति के लयि साझा प्रोतसाहन पैदा कर सकता है।
 - **भारत-यूएई व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता** (India-UAE Comprehensive Economic Partnership Agreement) जैसी पहल, पारस्परिक रूप से लाभकारी आर्थिक संबंध वकिसति करने के लयि एक मॉडल के रूप में कार्य कर सकती है।
 - इसके अतरिकित, भारत मध्य-पूर्व में अपनी डजिटल पैठ और प्रभाव को बढ़ाने के लयि इस क्षेत्र में एकीकृत भुगतान इंटरफेस को बढ़ावा देने में अपने वशाल प्रवासी समुदाय का लाभ उठा सकता है।
- **रक्षा एवं सुरक्षा सहयोग को मज़बूत करना:** भारत मध्य-पूर्व में प्रमुख भागीदारों के साथ अपने रक्षा एवं सुरक्षा सहयोग को गहरा कर सकता है।
 - इसमें **संयुक्त सैन्य अभ्यास और रक्षा प्रौद्योगिकियों** का सह-वकिस करना शामिल हो सकता है।
 - भारत स्वयं को एक वशिवसनीय सुरक्षा भागीदार के रूप में स्थापति कर क्षेत्रीय स्थरिता में योगदान दे सकता है, आक्रामकता को रोक सकता है और अपने मध्य-पूर्वी समकक्षों के बीच भरोसे का नरिमाण कर सकता है।
- **वैश्विक उत्तर और वैश्विक दक्षिण के बीच की कड़ी के रूप में मध्य-पूर्व:** वैश्विक दक्षिण (Global South) की अग्रणी आवाज़ के रूप में भारत की स्थति उसे मध्य-पूर्वी देशों और पारंपरिक पश्चिमी शक्तियों के बीच मध्यस्थता की भूमिका नभाने में सक्षम बना सकती है।
 - भारत वकिसशील देशों के हतियों की वकालत करने, **वैश्विक शासन संरचनाओं में सुधार का समर्थन करने और दक्षिण-दक्षिण सहयोग** को बढ़ावा देने के रूप में वभिजन को दूर करने तथा संवाद एवं वारता के लयि अधिक समावेशी मंच का नरिमाण करने में मदद कर सकता है।
 - इसमें मध्य-पूर्व के देशों की चतिओं को मुखरता से प्रकट करने और अधिक समतापूर्ण वैश्विक व्यवस्था को बढ़ावा देने के लयि **सलामिक सहयोग संगठन** तथा अन्य क्षेत्रीय नकियों के साथ भारत की संलग्नता को बढ़ाना शामिल हो सकता है।
- **पारस्परिक पर्यटन को बढ़ावा देना:** भारत समान वचिारधारा वाले **मध्य-पूर्वी देशों से आग्रह** कर सकता है कि वे मध्य-पूर्व और भारत के बीच पारस्परिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लयि इसके वशाल पर्यटन बाज़ार का लाभ उठाएँ।
 - इसमें **सहयोगात्मक वपिणन अभियान** शामिल हो सकते हैं, जैसे कि हाल ही में **इंडियन प्रीमियर लीग (IPL)** के दौरान प्रदर्शति 'वजिति सऊदी' का वजिापन, जहाँ दोनों क्षेत्रों के साझा हतियों और आकांक्षाओं का लाभ उठाया गया था।
 - भारत मध्य-पूर्व के आगतुकों की प्राथमकताओं के अनुरूप **वीज़ा प्रक्रयियों को सुव्यवस्थति** कर सकता है तथा उनके लयि वशिष पर्यटन पैकेज वकिसति कर सकता है, जसिसे दोनों क्षेत्रों के बीच पर्यटन एवं आतथिय संबंधों को और मज़बूती मिलेगी।
- **आपदा प्रबंधन और मानवीय सहायता को सुदृढ़ बनाना:** भारत अपनी मौजूदा क्षमताओं और अनुभव के आधार पर आपदा प्रबंधन और मानवीय सहायता के लयि मध्य-पूर्व में एक वशिवसनीय भागीदार के रूप में अपनी स्थति मज़बूत कर सकता है।
 - इसमें पूर्व-चेतावनी प्रणाली वकिसति करने, आपातकालीन प्रतकिरयि क्षमताओं को बढ़ाने तथा प्राकृतिक आपदाओं या जटलि मानवीय संकटों के दौरान त्वरति राहत प्रदान करने के लयि क्षेत्रीय संगठनों और राष्ट्रीय प्राधिकरणों के साथ समन्वय करना शामिल हो सकता है।
 - तुर्की और सीरयि में चलाया गया **'ऑपरेशन दोस्त'** भारत की त्वरति मानवीय सहायता का एक प्रमुख उदाहरण है।

नषिकर्ष:

मध्य-पूर्व भारत के लयि अत्यंत महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बना हुआ है, जसिके साथ इसके गहरे ऐतहिसिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध हैं। भारत **वैश्विक दक्षिण** की अग्रणी आवाज़ के रूप में अपनी स्थति का लाभ उठाकर मध्य-पूर्वी देशों और पारंपरिक वैश्विक शक्तियों के बीच की खाई को दूर करने में एक रचनात्मक भूमिका नभिा सकता है, साथ ही आतंकवाद और जलवायु परिवर्तन जैसी साझा चुनौतियों का समाधान भी कर सकता है।

अभ्यास प्रश्न: मध्य-पूर्व की उभरती भू-राजनीतिक गतशीलता में भारत की भूमिका का वशिलेषण कीजयि। भारत अपने राष्ट्रीय हतियों की सुरक्षा करते हुए विभिन्न क्षेत्रीय शक्तियों के साथ अपने संबंधों को कसि प्रकार संतुलति कर सकता है?

??????:

प्रश्न. भूमध्य सागर नमिनलखिति में से कनि देशों की सीमा है? (2017)

1. जॉर्डन
2. इराक
3. लेबनान
4. सीरिया

नीचे दयि गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनयि:

- (a) केवल 1, 2 और 3
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 3 और 4
- (d) केवल 1, 3 और 4

उत्तर: (c)

प्रश्न. दक्षणि-पश्चिमी एशिया का नमिनलखिति में से कौन-सा एक देश भूमध्यसागर तक फैला नहीं है? (2015)

- (a) सीरिया
- (b) जॉर्डन
- (c) लेबनान
- (d) इज़रायल

उत्तर: (b)

प्रश्न. कभी-कभी समाचारों में उल्लखिति पद "टू-स्टेट सोल्यूशन" कसिकी गतविधियों के संदर्भ में आता है? (2018)

- (a) चीन
- (b) इज़रायल
- (c) इराक
- (d) यमन

उत्तर: (b)

??????:

प्रश्न. " भारत के इज़रायल के साथ संबंधों ने हाल में एक ऐसी गहराई एवं वविधिता प्राप्त कर ली है, जसिकी पुनर्वापसिी नहीं की जा सकती है" वविचना कीजयि। (2018)